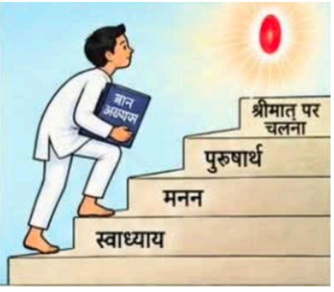

07-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - देरी से आते हुए तेज़ पुरुषार्थ करो तो बहुत आगे जा सकते हो, दूसरों की चिंता छोड़ अपने पुरुषार्थ में लग जाओ"

सच्चे पुरुषार्थ का मार्ग अकेले का होता है,
सफलता मिलने के बाद सब साथी बन जाते हैं।

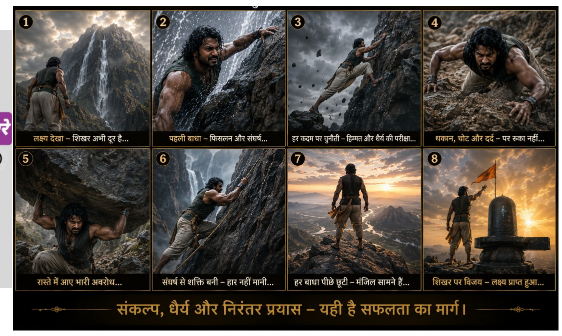

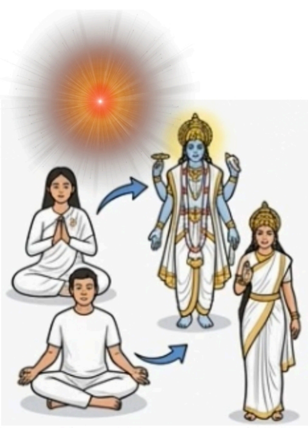

प्रश्नः- कौन सा कर्तव्य एक बाप का है जो कोई मनुष्य का नहीं हो सकता?

उत्तरः- मनुष्य को देवता बनाना, उसे शान्तिधाम, सुखधाम का मालिक बना देना, यह कर्तव्य एक बाप का ही है जो कोई मनुष्य नहीं कर सकता। तुम्हें निश्चय है संगम पर ही हम भगवानुवाच सुनते हैं। अभी स्वयं भगवान कल्प पहले मुआफिक राजयोग सिखला रहे हैं।

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

न योग धारणा सेवा M.imp.

07-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। रूहानी बेहद का बाप बेहद के रूहानी बच्चों प्रति समझाते हैं। यह एक-एक अक्षर वा ज्ञान रत्न लाखों रूपयों का है। बाप ने समझाया है परमात्मा को रूप-बसन्त भी कहते हैं। उनका रूप भी है, नाम शिवबाबा है। वह ज्ञान का सागर है, जिस ज्ञान से सद्गति होती है। ज्ञान धन भी है, ज्ञान पढ़ाई भी है। यह ज्ञान देते हैं- स्प्रीचुअल फादर। आत्मा को कहा जाता है- स्प्रीचुअल रूह। भक्ति मार्ग में आत्मायें कितना भटकती हैं, बाप से मिलने के लिए। उनको ढूँढती हैं। समझते भी हैं भगवान एक शिव है फिर भी धक्के खाते रहते हैं। बाप आकर समझाते हैं कि रूहानी बच्चों, तुम तो अविनाशी हो, परमधाम में रहने वाले हो, जहाँ से फिर आते हो यहाँ पार्ट बजाने। तुम दूरदेश के रहने वाले हो। यह ड्रामा है, इसका नाम है हार-जीत का खेल। सुख-दु:ख का खेल। बाप समझाते हैं कि हम और तुम सब शान्तिधाम के रहने वाले हैं। उसको निर्वाणधाम भी कहते हैं। पहले तो यह निश्चय करना है कि हम वहाँ के रहने वाले हैं। हम आत्मा का स्वधर्म है शान्त। आत्मा बिन्दी में सारा अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। बाप पढ़ाते भी तुमको हैं, तुम दुनिया वाले मनुष्यों

कहने को भगवान को मानते थे, कब
कहना भगवान की मानते थे
चले थे डगर में अन्धेरों में गिरते, अभी
ज्ञान की चाँदनी मिल गयी है
हमें आप बाबा ऐसे मिले हैं कि जैसे नई
जिन्दगी मिल गयी है...

ज़िन्दगी की यही रीत है हार के बाद ही जीत है -2
थोड़े आँसू हैं थोड़ी हँसी आज ग़म है तो कल है ख़ुशी
ज़िन्दगी की यही रीत ...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

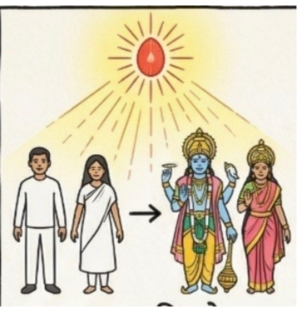

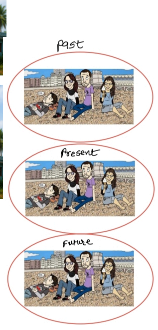

की चिंता करते हो। तुमको निश्चय है ना कि भगवानुवाच होता ही संगम पर है, फिर कब होता नहीं। कोई भी मनुष्य को देवता नहीं बना सकता। शान्तिधाम, सुखधाम का मालिक नहीं बना सकता।

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

कल्प पहले भी बाप ने बनाया था। अब जो प्रेजीडेन्ट बना है 5 हजार वर्ष के बाद वही बनेगा। सारी दुनिया की जो सीन सीनरियाँ हैं, 5 हजार वर्ष के बाद रिपीट होंगी। बुढ़ियाँ इतना सब धारण नहीं कर सकती हैं तो उन्हों को कहा जाता है सिर्फ 3 बातें याद करो - हम आत्मा शान्तिधाम की रहने वाली हैं, फिर सुखधाम में आते हैं फिर आधाकल्प के बाद जब रावणराज्य शुरू होता है तो विकारी बन जाते हैं, इसको कहा जाता है दु:खधाम। जब दु:खधाम पूरा होता है तब बाप कहते हैं मुझे याद करो। मुझे आना पड़ता है तुमको शान्तिधाम, सुखधाम में ले जाने के लिए।

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

only

अब जो आकर बाप के बने हैं, वही वर्सा पायेंगे। यह सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है।

समझा?

करोड़ों मनुष्य आकर कुछ न कुछ बाप से सुनेंगे, समझेंगे। वृद्धि होती जायेगी। सब तरफ तुमको जाकर समझाना होगा। अखबार द्वारा भी बहुत सुनेंगे, पाकिस्तान में भी अखबार द्वारा पढ़ेंगे। वहाँ बैठे भी यह ज्ञान सुनेंगे। गीता का प्रचार सारी दुनिया में बहुत है। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो और वर्से को याद करो। यह लिखत अखबार में पढ़ेंगे इसलिए भी बहुत ब्राह्मण बनेंगे, जिन्हों को वर्सा लेना होगा तो वह जरूर आकर लेंगे। अभी टाइम थोड़ा पड़ा है, वृद्धि होती रहेगी। देरी से आयेंगे तो फिर तीखा पुरुषार्थ करना पड़ेगा। कल्प पहले जितने स्वर्गवासी बने थे, उतने अब भी बनेंगे जरूर। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। शान्तिधाम वाले शान्तिधाम में जायेंगे। फिर अपने-अपने समय पर पार्ट बजाने आयेंगे। अब बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करो तो तुम घर पहुँच जायेंगे। संन्यासी मुक्ति के लिए माथा मारते हैं, इसलिए सबको कहते हैं मुक्ति ही ठीक है। सुख तो काग विष्टा के समान है। शास्त्रों में लिख दिया है कि सतयुग में भी दु:ख की बातें थी, समझते कुछ भी नहीं। कहते हैं परमात्मा को आना है। पतित-पावन परमात्मा आओ, आकर हमको

अभी गफलत में ना रहना, ये बाते मीठे बाबा ने 1969 से पहले कही थी

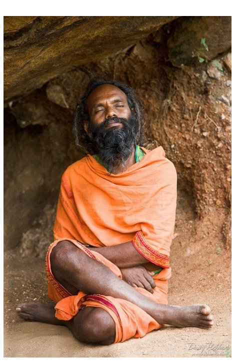

रास्ता बताओ। दूसरे तरफ कहते गंगा पतित-पावनी है। गंगा स्नान, यज्ञ-तप, यात्रा करना यह सब भगवान से मिलने के रास्ते हैं। जबकि बुलाते हो परमात्मा को, फिर धक्के क्यों खाते हो! यह सब भक्ति मार्ग की नूँध है। मनुष्यों को जो आता सो बोलते रहते हैं। कितनी मेहनत करते हैं परमात्मा से मिलने के लिए। अब भगवान से मिलने भगत जायेंगे या भगवान को यहाँ आना पड़ेगा? पतित आत्मा तो जा न सके। बाप आते हैं ले जाने के लिए। सभी आत्माओं का पण्डा एक ही है। तुम भी पवित्र बन उनके पीछे चले जायेंगे।

साज़न तुमको ज्ञान रत्नों से श्रृंगारते हैं- महारानी-महाराजा बनाने। बाकी श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं - फलानी को भगाया, पटरानी बनाया।

यह बातें लगती नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो हम स्वर्ग की महारानी बनेंगे। तुम ही स्वर्गवासी थे। अब बाप फिर बनाने आया है। 84 जन्मों की बात है। 84 लाख जन्म कोई याद कर न सके।

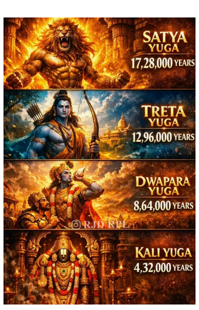

सतयुग को लाखों वर्ष दे दिये हैं, त्रेता को कम दिये हैं। यह तो हिसाब ही नहीं बनता।

बाप कितना सहज कर बताते हैं कि सिर्फ दो बातें याद करनी है अल्फ और बे। तो तुम पवित्र भी बनेंगे, उड़ भी

सकेंगे और ऊंच पद भी पायेंगे। तो यह ओना रखना चाहिए कि कैसे भी करके बाप को याद करना है। माया के तूफान भी आयेंगे, परन्तु हार नहीं खाना। भल कोई क्रोध भी करे परन्तु तुम नहीं बोलो। संन्यासी भी कहते हैं मुख में ताबीज़ (मुहलरा) डाल दो, तो वह बोल-बोल कर चुप हो जायेगा। बाप भी कहते हैं कोई क्रोध से बोले तो तुम शान्त होकर देखते रहो। कोई भी हालत में तुम्हें शिवबाबा को याद करना है। बाबा की याद से ही वर्सा भी याद आयेगा। तुम्हारे अतीन्द्रिय सुख का गायन है कि हम 21 जन्म के लिए स्वर्ग के परीज़ादे बनेंगे। वहाँ दु:ख का नाम भी नहीं होगा। तुम 50-60 जन्म सुख भोगते हो, सुख का हिसाब जास्ती है। सुख-दु:ख इक्वल हो तो फायदा ही क्या! तुम्हारे पास धन भी बहुत होता है। कुछ समय पहले यहाँ भी बहुत सस्ता अनाज था। राजाओं की बड़ी राजाई थी। बाबा ने 10 आने मण बाजरी बेची है। तो उनसे भी आगे कितनी सस्ताई होगी। मनुष्य थोड़े होंगे, अन्न की परवाह नहीं होगी। अब यह तो याद रहना चाहिए कि पहले हम घर जाकर फिर नई दुनिया में आकर नया पार्ट बजायेंगे। वहाँ हमारा शरीर भी सतोप्रधान तत्वों

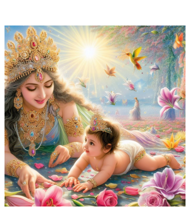

से बनेगा। अब 5 तत्व बिल्कुल ही तमोप्रधान पतित बन गये हैं। आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। वहाँ शरीर रोगी नहीं होता। यह सब समझने की बातें हैं। बच्चों को यहाँ अच्छी रीति समझाते हैं - फिर घर में जाकर भूल जाते हैं। यहाँ बादल भरकर कितना खुश होते हैं, बाहर जाने से भूल जाते हैं। आगे रास - विलास बहुत चलता था। फिर वह सब बन्द कर दिया। मनुष्य समझते थे -जादू है। भक्ति में जब नौधा भक्ति करते हैं तब मुश्किल साक्षात्कार होता है। यहाँ भक्ति की तो बात ही नहीं, बैठे-बैठे साक्षात्कार में चले जाते थे, इसलिए जादू समझते थे।

We can see this All Around

आजकल दुनिया में कितने भगवान बन गये हैं। नाम रखते हैं सीताराम, राधेकृष्ण आदि। कहाँ वह स्वर्ग के मालिक, कहाँ यह नर्कवासी। इस समय सब नर्कवासी हैं। सीढ़ी में साफ दिखाया है। सीढ़ी बच्चों ने अपने विचार सागर मंथन से बनाई है। बाबा देख खुश हुआ। सीढ़ी में सब बातें आ जाती हैं। द्वापर से

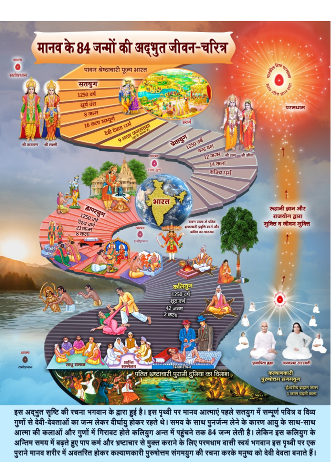

07-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

विकारी राजायें कैसे भक्ति करते-करते नीचे आये हैं। अभी तो कोई ताज नहीं है। चित्र पर समझाना सहज होता है। 84 जन्मों में कैसे उतरती कला होती है, फिर चढ़ती कला कैसे होती है। गाते भी हैं चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला। बाप आकर सबको सुख देते हैं। सब पुकारते हैं कि हे बाबा हमारा दु:ख हरो, सुख दो। परन्तु कैसे दु:ख हरते हैं, सुख कैसे मिलता है, यह किसको मालूम नहीं।

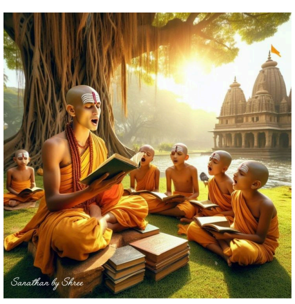

आजकल मनुष्य गीता कण्ठ कर सुनाते हैं, नटशेल में अर्थ समझा देते हैं। संस्कृत में श्लोक कण्ठ करके सुनाते हैं तो कह देते यह महात्मा अच्छा है। लाखों मनुष्य जाकर पांव पड़ते हैं। उस पढ़ाई में (लौकिक पढ़ाई में) तो 15-20 वर्ष लग जाते हैं। उन्हों में कोई बुद्धिवान होते हैं तो झट श्लोक आदि कण्ठ कर सुनाने लगते हैं, तो उनके पास ढेर पैसे इकट्ठे हो जाते हैं। यह सब कमाई के रास्ते हैं। जब कोई देवाला मारता है तो भी जाकर संन्यास धारण करता है, तो सब चिंतायें दूर हो जाती हैं फिर कुछ न कुछ

मन्त्र - जन्त्र याद कर लेते हैं, चक्र लगाते रहते हैं। ट्रेन में भी चक्र लगाते रहते हैं। यहाँ तो बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप और आत्मायें सब निराकारी दुनिया में रहती हैं। वहाँ से साकारी दुनिया में आते हैं पार्ट बजाने। अब नाटक पूरा होना है। तुम तमोप्रधान होने के कारण वापिस जा नहीं सकते। अब बाबा आया है तुमको सतोप्रधान बनाने। सभी अपने घर जायेंगे। बाकी स्वर्ग में सिर्फ देवी-देवताओं का राज्य होगा। शान्तिधाम, सुखधाम, दु:खधाम... कब-कब था यह भी किसकी बुद्धि में नहीं आयेगा क्योंकि घोर अन्धियारे में हैं। समझते हैं कलियुग का अन्त अजुन इतने हजार वर्षों के बाद होगा। कोई हिसाब ही नहीं है। मनुष्य बढ़ते जाते हैं, अन्न मिलता नहीं। 40 हजार वर्ष अभी और हों तो पता नहीं क्या हो जाए। जो बोलते हैं वह बिल्कुल ही झूठ। सच की रत्ती भी नहीं। अब बाप सिखलाते हैं रावण पर कैसे विजय पानी है। रावण पर जीत तुम ही पाते हो। सारी दुनिया को रावण से छुड़ा देते हैं। तुम्हारी शक्ति सेना है, तुम भारत को स्वर्ग बना रहे हो। कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं। फिर तुमको बाप और वर्से

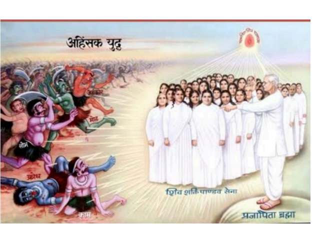

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

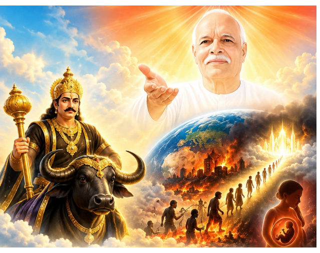

को याद कर कितना खुश रहना चाहिए। ज्ञान मार्ग में खुशी बहुत होती है। अभी बाबा आया हुआ है, अभी हम इस पुरानी दुनिया से गये कि गये। बाबा को याद करने से सतोप्रधान बनेंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेगी, फिर करके रोटी टुकड़ा मिलेगा, इससे क्या फायदा। जितना हो सके अपना पुरुषार्थ करना है। श्रीमत पर चलना है। कदम-कदम पर बाबा से राय लेनी है। कोई कहते हैं बाबा धन्धे में झूठ बोलना पड़ता है। बाप कहते हैं धन्धे में तो झूठ होता ही है, तुम बाबा को याद करते रहो। ऐसे नहीं विकार में जाकर फिर कहो मैं बाबा की याद में था। नहीं, विकार में गये तो मरे। यह तो बाप के साथ प्रतिज्ञा की है ना। पवित्रता के लिए ही राखी बांधी जाती है। क्रोध के लिए कब राखी नहीं बांधी जाती। राखी बंधन का मतलब ही है कि विकार में नहीं जाना है। मनुष्य कहते हैं पतित-पावन आओ।

Attention Please..!

Note it down

ये पक्का समझ लो..

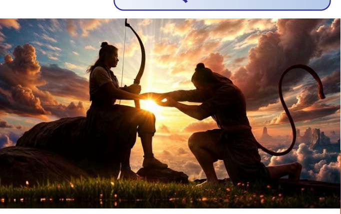

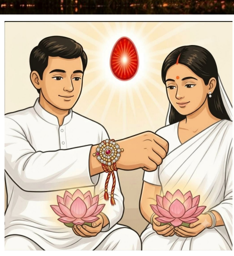

कापारी खुशी

तुम बच्चों के अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, फिर बाबा साथ ले जायेंगे।

वहाँ से स्वर्ग में चले जायेंगे। जितना हो सके सवेरे उठकर बाबा को याद करना है। याद करना गोया कमाई करना, इसमें आशीर्वाद क्या करेंगे। ऐसे थोड़ेही कहना है - आप आशीर्वाद करो तो हम याद करें। सब पर आशीर्वाद करें तो सब स्वर्ग में चले जायें। यहाँ तो मेहनत करनी है। जितना हो सके बाबा को याद करना है। बाबा माना वर्सा। जितना याद करेंगे उतना राजाई मिलेगी, याद से बहुत फायदा है। सस्ता सौदा है। ऐसा कोई सस्ता सौदा दे न सके। यह भी कोई विरला ही लेते हैं। अच्छा!

M.M.M.....imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों का नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) जब कोई क्रोध करता है तो बहुत-बहुत शान्त रहना है। क्रोधी के साथ क्रोधी नहीं बन जाना है। माया के किसी भी तूफान से हारना नहीं है।

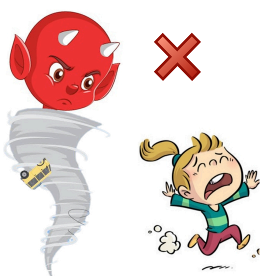

2) सवेरे-सवेरे बाप को याद करना है, अपनी कमाई जमा करनी है। पवित्रता की पक्की राखी बांधनी है।

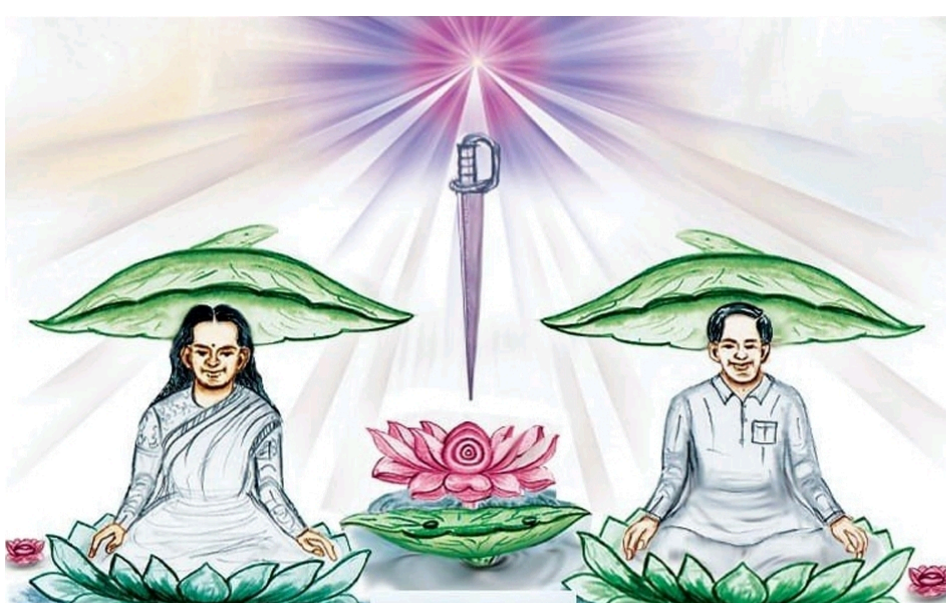

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

07-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- अपने अव्यक्त शान्त स्वरूप द्वारा वातावरण को अव्यक्त बनाने वाले साक्षात मूर्त भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

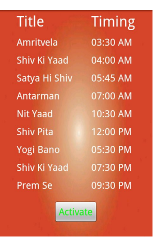

जैसे सेवाओं के और प्रोग्राम बनाते हो ऐसे सवेरे से रात तक याद की यात्रा में कैसे और कब रहेंगे यह भी प्रोग्राम बनाओ और बीच-बीच में दो तीन मिनट के लिए संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप कर लो,

जब कोई व्यक्त भाव में ज्यादा दिखाई दे तो उनको बिना कहे अपना अव्यक्ति शान्त रूप ऐसा धारण करो जो वह भी इशारे से समझ जाये, इससे

Advantages

1 वातावरण अव्यक्त रहेगा।

2 अनोखापन दिखाई देगा और आप 3 साक्षात्कार कराने वाले साक्षात मूर्त बन जायेंगे।

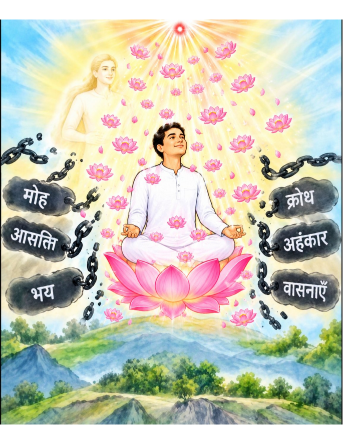

स्लोगन:- सम्पूर्ण सत्यता ही पवित्रता का आधार है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

07-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

एक समय की बात है। एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे। तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया। महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने उन्हें बार-बार डंक मारा। अंतत: महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया। थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे। जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी।

तब महात्मा ने कहा- बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ।

शिक्षा- मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों, मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

अगर कोई आपके सहयोगी भाई व बहन, परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान - नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं

तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

imp.

page-15

रूप बसन्त

विशाल नगरी में महाराज चन्द्रसेन की दो रानियाँ थीं। एक सुनीति जो बहुत ही भक्ति-भाव वाली थी, दूसरी कनकलता जो कि बहुत ही अभिमानी और अपनी ही मनमानी करने और कराने वाली थी। रानी सुनीति के दो बेटे थे - रूप कुंवर और बसंत कुंवर। दोनों ही बेटे बहुत ही एकाग्रता से राजविद्या पढ़ते थे। दूसरी रानी कनकलता का बेटा मान कुंवर बहुत ही उदण्ड और शरारती था। वह पढ़ाई पढ़ने की बजाए अपने मित्रों के साथ नगर में सबको परेशान कर अपना रोब जमाने निकल पड़ता था। छोटी-सी बीमारी में सुनीति रानी की मृत्यु के बाद रानी कनकलता ने दांवपेंच लगाकर दोनों कुंवरों को देश निकाला दिलवा दिया। राज्य से बाहर निकलने के बाद बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को समझाया कि हमें किसी से भी यह नहीं कहना है कि हम महाराजा चन्द्रसेन के बच्चे राजकुमार हैं क्योंकि ऐसा करने से अपने बाप का नाम बदनाम होगा।

ये दोनों भाई जहाँ भी काम करने जाते तो कोमल हाथों में छाले पड़ जाते थे पर फिर भी सबकुछ चुपचाप सह लेते थे। वे जहाँ-जहाँ काम करते वहाँ-वहाँ दोनों के गुण, बोलचाल, रॉयल्टी, व्यवहार आदि को देख सब यही कहते कि ये कोई साधारण लड़के नहीं लगते हैं, ये तो जैसे राजकुमार लगते हैं। कार्य कराने वाले कभी-कभी उनको अपमानित भी करते थे, ज्यादा काम भी कराते थे परन्तु फिर भी दोनों ही कुंवर सदा अपकार करने वालों पर भी उपकार करते थे। वे कभी किसी का काम बिगाड़ते नहीं थे।

थोड़ा धन भी वे जरूरतमंदों को दान अवश्य करते थे। कभी भोजन करने बैठे और कोई मांगने वाला आ जाता तो जिसके घर पर काम करते थे वह उनको भगाने की कोशिश करता था लेकिन रूप-बसंत खड़े होकर अपना

भोजन उनको दे देते थे। आसपास रहने वालों की समस्याओं को सुनकर उन्हें कुछ न कुछ सुझाव देते थे और अपनी तरफ से भी कुछ मदद अवश्य करते थे। पूजा-पाठ आदि भी करते थे। जिस भी गाँव में जाते थे वहाँ के लोग उन्हों के पास अपनी समस्याओं को लेकर स्वत: ही आते थे।

एक बार उन्हें लगा कि हम छोटे-छोटे गाँवों में काम करते हैं, इससे अच्छा है कि हम किसी बड़े नगर में जाकर काम करें। यह सोचकर दोनों भाई नगर की ओर चल दिये। चलते-चलते घोर जंगल आया और रात हो गई। उन्होंने सोचा कि रातभर यहीं ठहर जाते हैं। रात के चार प्रहरों में से दो प्रहर एक भाई पहरा देगा और अगले दो प्रहर दूसरा भाई पहरा देगा, ऐसा निश्चय किया गया। सबसे पहले बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को सुला दिया। दो प्रहर पूरे होने पर भी बड़े भाई की, छोटे को जगाने की इच्छा नहीं हुई लेकिन तीन प्रहर पूरे होते-होते अचानक बसन्त कुंवर की आंखें खुल गयीं। आसमान में तारे देखकर उसने कहा, भैया, आपने मुझे तीन प्रहर सोने दिया। अब आप आराम से सो जाइये। दिनभर चलने और तीन प्रहर जागरण की थकान के कारण रूप कुंवर गहरी नींद में सो गया। बसंत कुंवर जाग रहा था। उस समय पेड़ पर तोता-मैना आपस में बात कर रहे थे कि इस पेड़ पर एक साल में सिर्फ एक ही फल पकता है लेकिन यह फल ऐसा है कि जो इस फल को तोड़ेगा उसे विषैला नाग डसेगा और जो उसे खायेगा वह सुबह होते ही महाराजा बन जायेगा। लेकिन महाराजा बनते ही वह अपनी पुरानी याददाश्त भूल जायेगा। सिर्फ संस्कार इमर्ज रहेंगे। जब उसे कोई फिर से याद दिलायेगा तब ही उसे पुरानी स्मृति आयेगी। इसलिए आज तक कई लोगों ने यह फल खाने की कोशिश की लेकिन उन्हें विषैला नाग डस गया। तोता-मैना की ये बातें सुनकर बसंत कुंवर के मन में आया कि हम तो दोनों भाई हैं। रूप कुंवर ने तो ये बातें सुनी नहीं हैं तो मैं ऐसा करूं कि इस फल को तोड़कर बड़े भाई को खिला देता हूँ ताकि वह महाराजा बन जाये क्योंकि उनमें मेरे से भी ज्यादा

प्रजापालन के गुण हैं। वह प्रजा को बहुत सुखी रखेंगे (त्याग भावना)।

वह खुद फल खाकर महाराजा बन सकता था फिर भी उसने फल तोड़कर तुरन्त ही रूपकुंवर को जगाकर कहा, ''भैया, इस पेड़ पर बहुत ही मीठे फल थे। मैंने तो बहुत खाये, अब एक ही बचा है, आप इसे खा लो।'' ऐसा कहकर रूप कुंवर को फल खिला दिया। थोड़ी ही देर में एक विषैला नाग आया और बसंत कुंवर को डसकर एक पल में वहाँ से चला गया। बसंत कुंवर बेहोश हो गया। तब रूप कुंवर उसको उठाकर पास ही बहती हुई एक नदी के किनारे पर ले गया और दंश वाले भाग पर थोड़ा चीरा लगाकर पांव को बहते पानी में रखा ताकि खून के साथ जहर भी पानी में बह जाये। थोड़ा-सा उजियारा होने पर उसे थोड़ी ही दूरी पर नगर दिखाई दिया। वह किसी वैद्य को बुलाने के लिए उस ओर दौड़ पड़ा।

उस नगर के राजा को कोई वारिस नहीं था। राजा की मृत्यु के बाद राजपुरोहित ने कहा कि पूरे राज्य के लोग नगर चौक में इकट्ठे हो जायें और हथिनी जिस पर भी जल-कलष रखेगी वही इस राज्य का नया राजा बनेगा। उस अनुसार पूरे ही राज्य के लोग नगर-चौक में सुबह होने से पूर्व ही पहुँच गये।

दूसरी तरफ, रूप कुंवर वैद्य को ढूंढने जब राज्य में गया तो हर घर खाली था। वह जब नगर-चौक में पहुँचकर वैद्य से मिलकर उसको अपने साथ चलने की प्रार्थना कर ही रहा था कि उतने में ही हथिनी घूमती-घूमती उसी स्थान पर आकर ठहर गई और उसने रूप कुंवर के सिर पर ही जल-कलष रख दिया। कलष का जल सिर पर पड़ते ही रूप कुंवर पिछली याददाश्त भूल गया। सिर्फ राजाई संस्कार इमर्ज रहे। साधारण रूप वाला रूप कुंवर जो कि मूल रूप में राजाई कुल का ही बेटा था, अब सचमुच राजा बन गया। राज्याभिषेक के बाद जब उसने राज कारोबार संभाला तो पूरे ही राज्य में सुख-शान्ति का साम्राज्य

फैल गया। वह प्रजा को सब प्रकार की सुविधायें देने का ध्यान रखता। रात को और दिन में भी नगरचर्या करके लोगों के दु:ख-दर्द को जान लेता और फिर राज दरबार में चर्चा करके समाधान करता। उसका प्रजा के प्रति इतना वात्सल्य था कि थोड़े ही समय में वह प्रजाप्रिय राजा बन गया। उधर बसंत कुंवर नदी के बहाव में बहता हुआ उसी नगर के घाट के पास पहुँचा। तब कपड़े धोते हुए धोबी ने उसे बचा लिया और प्रयास करके उसे होश में ले आया। ठीक होने पर बसंत कुंवर ने अपने भाई रूप कुंवर को ढूंढने की कोशिश की। उसे पता चला कि वह इसी राज्य का महाराजा है लेकिन उसे यह भी पता था (पक्षी के कहने अनुसार) कि रूप कुंवर सारी ही याददाश्त भूल गया होगा और मैं जब याद दिलाऊंगा तभी उसे याद आयेगा। इसलिए वह युक्ति रचकर राज्य दरबार में पहुँच गया और वहाँ जाकर एक गीत सुनाया जिसमें अपनी पूरी जीवन कहानी सुना दी। गीत सुनते-सुनते महाराज रूप कुंवर को अपनी पुरानी स्मृति वापस इमर्ज हो गयी। और वह अपने भाई बसंत कुंवर को पहचान गया। बाद में उसे अपना मंत्री बना दिया और दोनों ही भाइयों ने बड़े ही सुचारू रूप से राज्य कारोबार चलाया।

आध्यात्मिक भाव – बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि ''बच्चे, आप अभी वनवाह में हो इसलिए रहो साधारण रूप में लेकिन आपके बोलचाल, व्यवहार आदि से सभी को यह लगे कि ये कोई साधारण आत्मा नहीं हैं। ये तो ईश्वरीय कुल या दैवी कुल की आत्मायें हैं। जैसे बसंत कुंवर ने सारी बातों का पता होते भी रूप कुंवर को महाराजा बनाया उसी तरह तुम बच्चों में भी त्याग की भावना होनी चाहिए। जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे तब तुम पुरानी याददाश्त, जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है, वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारों में इमर्ज रहेंगे। कल्प के अन्त में मैं आकर तुम बच्चों को फिर से आदि-मध्य और अन्त का ज्ञान दूँगा तब फिर से तुम्हें पुरानी स्मृति इमर्ज हो जायेगी।''

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(ए) मीठे बच्चे, दिन में भल काम करो, परन्तु अमृतवेले 4 से 5 बजे तक बैठ कर याद करो, तो बहुत **सुख फील होगा।** मनसा, वाचा, कर्मणा सबको सुख देने का ही पुरुषार्थ करना है। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए **अमृतवेले विशेष एकान्तवासी बनो।** रूहानी कमाई वाले बच्चे शरीर निर्वाह करते हुए भी सुबह उठ कर बहुत-बहुत प्यार से बाप को याद करेंगे। **आत्मा उड़ती रहेगी** और बाप समान रहमदिल बन अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम करेगी। सबको बाप का परिचय देंगे। नये-नये बहुत ऐसे भी निकलेंगे जो पुरानों से भी तीखे जायेंगे। मार्जिन है। अमृतवेले याद में बैठने की आदत पड़ जाये, तो बड़ा मजा आयेगा।

(ऐ) बाप ने समझाया है **खुशी का पारा चढ़ेगा अमृतवेले।** दिन और रात को वायुमण्डल बहुत गन्दा रहता है, उस समय याद मुश्किल रहती है। अमृतवेले का समय गाया हुआ है। उसी समय सभी आत्मायें थक कर, शरीर से डिटैच होकर

सो जाती हैं। वह है शुभ-मुहूर्त। ऋषि-मुनि, भक्त लोग भी अमृतवेले उठ कीर्तन आदि करते हैं क्योंकि उस समय शुद्ध वायुमण्डल रहता है। इसलिए अमृतवेले के शुभ-मुहूर्त में बाप को बहुत प्यार से याद कर, खुशी का पारा चढ़ाना चाहिए। चलते-फिरते भी याद का अभ्यास करना है। सवेरे उठ कर याद करने से उसका **नशा फिर सारा दिन रहेगा।**

(ओ) बाबा कहते हैं सवेरे उठ बाप को याद करो और विचार सागर मंथन के लिए अमृतवेले का टाइम अच्छा है। **विचार सागर मंथन करने से मक्खन अच्छा निकलता है।** विचार सागर मंथन करना है कि भगवान का परिचय सबको कैसे दें?

(औ) मीठे बच्चे, अमृतवेला **विशेष प्रभु-पालना की वेला है।** इसका महत्व जान, पूरा लाभ लो। कहाँ भी मूँझो तो बाप से पूछो। तार में, चिट्ठी में अथवा फोन पर पूछ सकते हो। **फोन सवेरे-सवेरे झट मिल सकता** है क्योंकि उस समय सिवाय तुम्हारे, बाकी सब सोये रहते हैं। बाप श्रीमत देते हैं — मीठे बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप की याद में बैठो, तो पूरा वर्सा मिलेगा।

गीतः- तुम मात पिता..... Click

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
आ–आ– आ–आ– आ
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे
कोई न अपना सिवा तुम्हारे
तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खेवैया
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
आ–आ– आ–आ– आ
जो खिल सके न वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो

हम जो गीत समझ पाए हैं, वो यहां रखा गया है।
अगर आपके हिसाब से हम गलत है तो कृपया सही गीत का mp3 और lyrics हमें merababa2809@gmail.com पर भेजना जी।

05/10/2026

योग धारणा सेवा M.imp.

Thank you for sharing and correcting the mistake through Email

1.BK yashkamalji
2. BK Prakash Bhai ji
3. BK Gautam Pandey ji
4. BK Manish bhati ji

MP3 — Youtube link

Actual song is here ⇒ Click Click